

इदलबि, सीरियाई युद्ध हेतु अंतमि वकिल्प

संदर्भ

हाल ही में रूस के राष्ट्रपति व्लादमिर पुतिन और उनके तुर्की समकक्ष रसेप तययपि एर्दोगान के बीच इदलबि को आतंकवादी हमले से बचाने के लिये समझौता किया गया है। उल्लेखनीय है कि यह सीरिया में अंतमि स्थान है जहाँ सरकार वरिधी तथा आतंकवादी गतिविधियाँ जारी हैं। इस समझौते के अनुसार, रूस और तुर्की इदलबि के आतंकवादियों और प्रशासनिक बलों के बीच एक असैन्य ज़ोन के माध्यम से संपर्क स्थापित करेंगे, उम्मीद है कि इससे मानवतावाद के समक्ष उत्त्पन्न संकट को रोका जा सकेगा।

इदलबि शहर

- इदलबि, सीरिया के उत्तर-पश्चिमी भाग में स्थिति एक शहर है और इस पर सीरियाई सरकार द्वारा शासन चलाया जाता है तथा यह अलेप्पो से 59 किलोमीटर दूर दक्षिण-पश्चिम में स्थिति है।
- कई महीनों से इदलबि पर युद्ध के बादल छाए हुए थे, तीन साल से अधिक समय तक यह शहर सीरियाई सरकार के नियंत्रण से बाहर रहा है। हाल ही में राष्ट्रपति बशर अल-असद ने वास्तव में यहाँ चल रहे गृहयुद्ध में जीत हासिल की है।
- दरअसल, तब से यहाँ शासन ने अलेप्पो, दारा और पूर्वी घाँटा समेत अधिकांश प्रमुख जनसंख्या वाले केंद्रों को फरि से हासिल कर लिया है जो प्रमुख रूप से आतंकवादियों के कब्जे में थे।
- सरकारी नियंत्रण के बाहर स्थिति इन तीन क्षेत्रों को इस प्रकार वभाजित किया जा सकता है: पहला क्षेत्र इदलबि शहर है, जो आतंकवादियों और जहादीदी समूहों द्वारा नियंत्रित है, वहीं दूसरा क्षेत्र कुरदस्तान का है जिस पर कुरद वदिरोहियों का नियंत्रण है और ये दमशिक के शत्रु नहीं हैं, बल्कि अधिक स्वायत्तता चाहते हैं तथा तीसरे क्षेत्र के अंतर्गत अफरीन तथा जराबुलस जैसे सीमावर्ती कस्बे शामिल हैं जो तुर्की के नियंत्रण में हैं।

सीरियाई गृहयुद्ध हेतु स्पष्ट और आखिरी वकिल्प इदलबि

- उपर्युक्त क्षेत्रों में शासन के पास कुरदों पर हमला करने की कोई तत्काल योजना नहीं है, क्योंकि उन्हें अमेरिका का समर्थन प्राप्त है।
- साथ ही सीरियाई सरकार तुर्की पर हमला कर एक बड़ा युद्ध का जोखिम नहीं उठा सकती है।
- जाहरि है कि अगली लड़ाई या शायद सीरियाई गृहयुद्ध के लिये स्पष्ट और आखिरी वकिल्प इदलबि ही था।
- उल्लेखनीय है कि हाल ही में रूस और तुर्की के बीच हुए समझौते के आधार पर ईरान ने भी इस योजना का समर्थन किया क्योंकि वह चाहता है कि बशर अल-असद पूरे सीरिया में अपना अधिकार दोबारा स्थापित करें।
- ये प्रांत सीरियाई राष्ट्रपति बशर अल-असद को सत्ता से हटाने की कोशिश कर रहे वदिरोहियों और जहादीदी गुटों का आखिरी गढ़ है।
- संयुक्त राष्ट्र का कहना है कि इदलबि में लगभग 29 लाख लोग रहते हैं जिनमें से करीब 10 लाख बच्चे हैं और इस शहर में रहने वाले अधिकतर लोग वदिरोहियों के कब्जे वाले अन्य इलाकों से भागकर आए हैं।
- दरअसल, जैसे-जैसे सरकार वदिरोहियों के ठिकानों पर जीत हासिल करती गई, वहाँ के लोग भागकर इदलबि आकर बस गए।
- उम्मीद जताई जा रही है कि अगर इदलबि में वदिरोहियों को खत्म कर दिया गया तो उनके पास सीरिया के भीतर बहुत कम इलाके बचेंगे और इस प्रकार इदलबि में वदिरोहियों की हार उनका अंत साबित हो सकती है।

तुर्की की भूमिका

- गृहयुद्ध की पछिली लड़ाई में रूस ने इस क्षेत्र में अपना नियंत्रण स्थापित कर लिया था। अलेप्पो और पूर्वी घाँटा में रूसी युद्धक विमान द्वारा की गई बमबारी शासन की जीत के लिये महत्वपूर्ण थी लेकिन इदलबि में स्थिति अलग है।
- पछिले दो वर्षों से रूस और तुर्की का एक-दूसरे के साथ संबंध ठीक नहीं हैं और पछिले साल रूस, तुर्की और ईरान इदलबि के लिये एक डी-एस्केलेशन योजना पर सहमत हुए, जिसने प्रांत को रूसी-सीरियाई हमलों से बाहर रखा था।
- इस समझौते की शर्तों के अनुसार, तुर्की द्वारा फ्रंट लाइन पर 12 अवलोकन अंक स्थापित किये गए और जो लोग शासनाधिकार क्षेत्रों के तहत नहीं रहना चाहते थे उन्हें इदलबि में शामिल किया गया था।
- वर्तमान में इस प्रांत में लगभग तीन मिलियन निवासी हैं और उनमें से से भी आधे से अधिक आंतरिक रूप से वसिस्थापित लोग हैं।
- तुर्की, जिसमें पहले से ही 5 मिलियन सीरियाई शरणार्थी हैं, को डर है कि इदलबि पर एक पूरी तरह से हमला एक और बड़े पैमाने पर शरणार्थी प्रवाह को उसकी ओर धकेल देगा।
- इदलबि में जहादियों की एक बड़ी संख्या हयात ताहररि अल-शम (HTS) की है, पूर्व में जबत अल-नुसर जो कि सीरिया में अल-कायदा सेना थी, प्रांत के सबसे शक्तिशाली आतंकवादी समूहों में से एक है।

- इसके अलावा, इदलबि तुर्की के साथ सीमा भी साझा करता है, जो अब बंद है और युद्ध की स्थिति में शरणार्थी तुर्की सीमा में या पड़ोसी अफरीन और जराबुलस क़्षेत्रों में जाएंगे, जो तुर्की द्वारा ही नयितरति होते हैं।
- अतः किसी भी स्थिति में, इदलबि पर हमले से तुर्की को खुद संकट का सामना करना पड़ेगा। दरअसल, अभी तक 2016 से जारी आतंकवादी हमलों की शरुखला खत्म नहीं हुई है इसलिये तुर्की की रुचि भी इदलबि के लिये एक अहसिक समाधान खोजने की है।

रूस की भूमिका

- दूसरी तरफ, रूस दुवधि में है और वह चाहता है कि असद गृहयुद्ध को जीतने के लिये सीरिया में वैध रास्ते का चयन करें। लेकिन रूस यह भी जानता है कि अलेप्पो और पूरवी घौता के अभयानों से पहले ही स्थिति बिगड़ चुकी है और इदलबि की आबादी को देखते हुए अगला युद्ध अधिक वनिशकारी होगा।
- इसके अलावा, रूसी राष्ट्रपति के साथ संबंधों को तरजीह दी है। उल्लेखनीय है कि तुर्की, जो नाटो का सदस्य है, का संबंध अमेरिका के प्रति तेज़ी से शतरुतापूर्ण हो रहा है,
- उपर्युक्त वैचारिक कारणों से रूस पश्चिमि एशिया के मामलों में संलग्न नहीं हो रहा है।
- रूस ने ईरान और इज़राइल दोनों के साथ अपने मज़बूत संबंध बनाए हैं और तुर्की के साथ बढ़ती साझेदारी इस क़्षेत्र में उसके शक्ति परीक्षण के लिये महत्त्वपूर्ण है क्योंकि तुर्की के साथ शतरुता रखकर रूस की बोस्पोरस तक पहुँच स्थापित नहीं हो पाएगी और इससे रूस की भूमध्य रणनीति भी खतरे में आ सकती है।
- आगे की राह
- इदलबि समझौता महत्त्वपूर्ण तो है लेकिन इसने संकट के लिये कोई यथार्थवादी समाधान नहीं दिया है क्योंकि समस्या का मुख्य कारण इदलबि में HTS की उपस्थिति है।
- संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, इदलबि में लगभग 15,000 HTS सेनानी हैं। सरकार की योजना HTS और तुर्की समर्थित विद्रोहियों सहित सभी आतंकवादी समूहों पर हमला करना है और इस प्रकार वह अलेप्पो प्रांत को फरि से अपने कब्जे में लाना चाहता है।
- न तो सीरियाई सरकार और न ही तुर्की अल-कायदा से जुड़े समूह को इदलबि में एक सुरक्षित आश्रय प्रदान करने की अनुमति दे सकते हैं।
- हालाँकि, तुर्की ने HTS सेनानियों से अपने संगठनात्मक शक्ति को बढ़ाने के लिये अहसिक रणनीति का उपयोग करने का प्रस्ताव किया है।
- इसके साथ ही वर्तमान समझौते को लागू करने का बोझ भी तुर्की पर ही है जिसके लिये प्रस्तावित असैन्य क़्षेत्र से विद्रोहियों के भारी हथियारों की वापसी और प्रांत के अंदर HTS को हराने के लिये एक मज़बूत रोड मैप तैयार करना ज़रूरी है और यह बहुत आसान नहीं है।
- यदि तुर्की अपनी प्रतिबद्धताओं को पूरा करने में विफल रहता है, तो रूस को उसकी मूल योजना यानी अलेप्पो मॉडल (जिस तरह अलेप्पो शहर से आतंकवादियों को खदेड़ा और इस शहर में शांति स्थापना हेतु भारी विधिवंश का मार्ग चुना गया) पर वापस जाने का बहाना देगा और यह एक और विधिवंश का कारण भी बनेगा।
- अतः कहा जा सकता है कि पुतनि-एरदोगन समझौते ने भले ही एक युद्ध को स्थगित कर दिया हो, लेकिन इससे युद्ध का संकट खत्म नहीं हुआ है।